ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 06, June 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

मध्य गंगा के पुरातात्विक स्थल सरायनाहर राय का विवरण

डा0 सुबास चन्द पाल

सरायनाहर राय (अक्षांश 25^0 48′ उ0. देशान्तर 81^0 50′ पू0) नामक स्थल प्रतापगढ़ से 15 कि0मी0 दक्षिण पश्चिम में एक गोखर झील के किनारे स्थित है। इस पुरास्थल की खोज सन 1960 ई0 में उत्तर प्रदेश के पुरातत्व विभाग के तत्कालीन निदेशक केसी० ओझा ने की। सन् 1970 ई0 में उत्तर प्रदेश के पुरातत्व विभाग ने भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के श्री पी0सी0 दत्त के सहयोग से मानव कंकाल का उत्खनन कराया था। तत्पश्चात इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के तत्वावधान में राधाकान्त वर्मा, वी0डी0 मिश्र तथा धनेश मण्डल ने प्रो0 जी0आर0 शर्मा के निर्देशन में 1971–72 तथा 1972–73 में उत्खनन किया। सरायनाहर राय का मध्यपाषाणिक स्थल 1,800 वर्गमीटर के क्षेत्र में विस्तृत है। यहाँ के उत्खननों से कब्रों में दफनाए हुए नरकंकाल गर्तचूल्हे लघुपाषाणोपकरण, तत्कालीन पशुओं और जलचरों की हड्डियाँ आदि प्राप्त हुए हैं। लोग समूह में रहते थे।

इस पुरास्थल में पानी के बहाव के कारण ऊपरी सतह कट जाने से मानव कंकाल झांकते हुए मिले। यहाँ पर उत्खनित 11 समाधियों से 14 मानव कंकाल प्रकाश में आए हैं। एक समाधि में चार कंकाल एक साथ दफनाए गये थे। इन कंकालों का प्रथम अध्ययन पी0सी0 दत्त ने किया है। इसके बाद इनका विस्तृत भौतिक नृतत्वशास्त्रीय विश्लेषण केनेडी ने किया है। यहाँ से 11 मानव समाधियाँ प्राप्त हुई हैं।

इसके उत्खनन के परिणामस्वरूप सामूहिक रूप से प्रयुक्त हुए गर्त चूल्हे और फर्श प्रकाश में आये हैं। मध्य पाषाणिक मानव ने इस क्षेत्र का उपयोग आवास स्थल एवं शवाधान के रूप में किया गया है। उल्लेखनीय है कि शव–स्थल, इस स्थल के उत्तर–पूर्वी भाग में सीमित था। दक्षिण–पश्चिम भाग में चूल्हों तथा एक फर्श के प्रमाण उपलब्ध हुए थे। इस प्रकार कुल ग्यारह

शवाधानों तथा आठ गर्त चूल्हों का उत्खनन किया गया था। यद्यपि स्थल पर अभी भी कम से कम तीन शवाधान तथा चार गर्त चूल्हे सतह पर वर्तमान हैं।

शवाधानों के उत्खनन से मध्यपाषाणिक मानव प्रकार तथा उसके कर्मकाण्डों एवं मान्यताओं पर प्रकाश पड़ता है। सभी मृतक विस्तीर्ण स्थिति में छिछले, लम्बायत, अण्डाकार गर्तों में पश्चिम–पूर्व दिशा में दफनाये गये थे। कपाल सभी कब्रों में पश्चिम की ओर था। शवों में कब्रों को भरने के लिए चूल्हे की मिट्टी, राख आदि का भी प्रयोग किया जाता था। लगभग सभी मृतकों को कब्र में रखते समय उनका एक हाथ पेट के ऊपर शरीर के आर–पार रखा जाता था। जिस विधि से कब्रों का निर्माण किया गया है, एवं शवों को रखा गया है तथा उनके साथ अन्य सामग्री मिली है, वह इस बात का प्रमाण है कि कब्र में दफनाने की विधि का यथेष्ट विकास हो चुका था। इन सभी में कब्र संख्या टप् विशेष उल्लेखनीय है। इनमें चार कंकाल दो स्तरों में रखे हुए मिले हैं। प्रत्येक स्तर में एक स्त्री तथा एक पुरुष हैं। स्त्री दोनों ही अवस्था में बायीं ओर है। क्या ये पति–पत्नी थे? ये एक साथ क्यों दफनाए गये? आदि अनिर्णीत प्रश्न हैं।

लगभग सभी मृतकों की आयु 16–30 वर्ष से अन्तर्गत थी। पुरुषों की लम्बाई 1.80 मीटर तथा स्त्रियों की उससे थोड़ी कम 1.60 मीटर थी। उत्खनित 15 कंकालों में सात पुरुष, तथा चार स्त्रियों के कंकाल हैं तथा चार कंकालों के लिंग की पहचान नहीं हुई है।

चूल्हे से जानवरों की जली अथवा अधजली बहुत सी हड्डियाँ मिली हैं। निश्चय ही उनका उपयोग भोज्य सामग्री के रूप में किया गया होगा। ये लोग गाय, भैंस, हाथी, कछुआ, मछली आदि से परिचित थे। पुराजीव शास्त्रियों ने यहाँ के जन्तुवर्ग का अध्ययन किया है, उनकी धारणा है कि ये सभी पशु जंगली थे, तथा पशुपालन का प्रारम्भ अभी नहीं हुआ था। गर्त चूल्हों का उपयोग सम्भवतः पशुओं का मांस भूनने के लिए होता था। थे चूल्हे गोलाकार, अण्डाकार अथवा अनियमित आकारों के थे। इनका मुँह चौड़ा तथा पैदी अपेक्षाकृत कम चौड़ी है। ऊपर की माप 1.49 मीटर से 0.72 मीटर है, तथा पैदी 1.02 मीटर से 0.45 मीटर है तथा ये 0.25 मीटर से 0. 10 मीटर गहरे हैं। इन्हें खोदने के लिए सींग अथवा कड़ी लकड़ी का उपयोग किया जाता रहा

होगा। एक चूल्हे को दो बार प्रयोग करने के प्रमाण मिले हैं। इन चूल्हों में केवल राख मिली है, कोयले के टुकड़े नहीं मिले हैं, सम्भव है कि ईंधन के रूप में घास–फूस का ही उपयोग करते थे। आवास क्षेत्र 5X4 मीटर आकार की एक फर्श मिली है, जिसके चारों कोनों पर एक–एक स्तम्भगर्त मिले हैं।

इस पुरास्थल से लघुपाषाण उपकरण निर्माण की विभिन्न अवस्थाओं में प्राप्त हुए हैं। उपकरण निर्माण के लिए चौल्सिडनी, अगेट, जैस्पर और कार्नेलियन पत्थरों का प्रयोग किया गया है। यहाँ से जो उपकरण प्राप्त हुए हैं, उनमें कई तरह के नोंक, ब्लेड, समानान्तर बाहु वाले और भूथड़े ब्लेड फलक, अर्धचन्द्र, विषम बाहु वाले समद्विबाहु त्रिभुज, खुरचनी, नोंक तथा तक्षणी आदि का उल्लेख किया जा सकता है।

जानवरों की हड्डियों पर बने हुए उपकरण यहाँ से अधिक नहीं मिले हैं। लेकिन कुछ पशुओं की सींगो से जमीन खोदने का काम लिया जाता था, इसीलिए उनकी नोंक अत्यन्त चिकनी हो गयी है। एक 13.2 से०मी० लम्बे तथा 3 से०मी० चौड़े हड्डी के बने हुए ब्लेड का भी उल्लेख किया जा सकता है, जिस पर फलकीकरण से तेज धार बनायी गयी है।

सरायनाहर राय के उत्खनन से मध्य पाषाणिक मानव के सामाजिक जीवन पर भी प्रकाश पड़ता है। सम्भवतः ये छोटे–छोटे समुदायों में अपेक्षाकृत स्थायी रूप से रहते थे। जिस विधि से स्त्री तथा पुरुषों के शव रखे हुए मिले हैं, हैं, उससे अनुमान किया जा सकता है कि किसी न किसी प्रकार की सामाजिक व्यवस्था अथवा स्त्री और पुरुषों के सम्बन्ध का प्रारम्भ होने लगा था।

सरायनाहर राय से एक कार्बन तिथि 10,345±110 वर्ष पूर्व उपलब्ध हुई है। यह बिना जली हुई मानव अस्थि पर आधारित है दूसरी तिथि टी0एफ0 1356 एवं 1359, 2940±125 (990±125 ई0पू0) है, जो जली हुई हड्डियों के नमूनों से निकाली गयी है।

सन्दर्भ

1. शर्मा, जी0आर0, 1973, स्टोन एज इन दी विन्ध्याज एण्ड दी गंगा वैली, रेडियो कार्बन डेट्स एण्ड इण्डियन आर्कयोलाजी, सम्पा0 डी0पी0 अग्रवाल और ए0 घोष, पृ0 106–108।
2. केनेडी, के0ए0आर0, एन0सी0 लोवेल और सी0वी0 बरो, 1986, मेसोलिथिक ह्यूमन रिमेन्स फ्राम द मेसोलिथिक सरायनाहर राय, पुरातत्व अंक 15, पृष्ठ 1–55।
3. कैनेडी, के0ए0आर0, कैनेथ, स्केलेटल एडाप्टेसन्स ऑफ मेसोलिथिक हन्टर फारेजर्श ऑफ नार्थ इण्डियाः महदहा एण्ड सरायनाहर राय कम्पेयर्ड, बायोआर्यालजी ऑफ मेसोलिथिक इण्डिया एन एन्टीग्रेटेड एप्रोच, इण्टरनेशनल यूनियन ऑफ प्रि एण्ड प्रोटोहिस्टारिक साइन्सेज, कोलोकियम 33, पृष्ठ 291–300, फोर्ली, इटली।
4. वर्मा आर0के0, 1996, सबसिस्टेन्स इकोनामी ऑफ द मेसोलिथिक कल्चर्स रिफ्लेक्टेड इन द राक पेन्टिंग्स ऑफ द विन्ध्यन रीजन, बायोआर्यालजी ऑफ मेसोलिथिक इण्डिया : एन एन्टीग्रेटेड एप्रोच इण्टरनेशनल यूनियन ऑफ प्रि एण्ड प्रोटोहिस्टारिक साइन्सेज, कोलोकियम 33, पृष्ठ 329–39. फोर्ली, इटली।